IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रारम्भिक विद्यालयों में अध्यापक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ. आर.के.एस.अरोडा
भगवन्त विश्वविद्यालय,अजमेर
राजस्थान, भारत।

शोधार्थी
दिनेश सिंह

सार

भारतीय शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी बताकर उसे मूल्यों से पर्याप्त रूप से जोडने की बात कही तथा इस विषय में अपने अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया। विभिन्न आयोगों की सिफारिशों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए परन्तु समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि प्रतिदिन व्यापक रूप में दृष्टिगत होती है। इसी विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुई कि प्रस्तावित शोधकार्य द्वारा अध्यापकों में विद्यमान मूल्यों के बारे में पता लगाया जाये, जिससे कि उनकी वर्तमान स्थिति को समझकर प्रभावी मूल्यों के निर्माण का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध समस्या का चयन किया गया। निष्कर्षतः प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक,आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर प्रारम्भिक विद्यालयों के प्राथमिक विद्यालयों व उच्च प्राथमिक विद्यालयों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में मूल्य संबंधी विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य के प्राप्तांक औसत से अधिक है। सुखवादी मूल्य आयाम के औसत प्राप्तांक से कम है।

की शब्द :– प्रारम्भिक विद्यालय, अध्यापक मूल्य।

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों– शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम में, शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। उसके निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी– समाज ज्ञानार्जन की उचित दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता। पाठ्यक्रम को सरस और बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है। शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया को देश–काल के अनुरूप सही दिशा प्रदान करते हैं। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त करने से लेकर भावी नागरिकों के सर्वाङ्गीण–विकास तक होती है। इस प्रकार व्यक्ति–निर्माण से लेकर राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अनिर्वचनीय है। इसी कारण गुरु को प्राचीन काल से ही देवत्रय से भी उच्च स्थान प्रदान किया गया है–

गुरू र्ब्रह्म गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, की जगह ले ली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2021 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च

गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवंत ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करना है। यह भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को, छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य, ऐसे व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए जो उत्कृष्ट, विचारशील और अच्छी रचनात्मक प्रवत्ति के हों। यह एक व्यक्ति को रुचि के एक या एक से अधिक विशिष्ट जैसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, व्यक्तिगत, तकनीकी, व्यावसायिक विषयों सहित क्षेत्रों में गहराई से अध्ययन करने और चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा भावना और 21 वीं सदी के कौशल को आवश्यक सीमा तक विकसित करने में सक्षम बनाती है। नई शिक्षा नीति वर्तमान प्रणाली में कुछ मौलिक परिवर्तन लाती है, और इसमें मुख्य आकर्षण बहु–विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज है ं, जिसमे प्रत्येक जिले में या उसके पास कम से कम एक छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, बेहतर छात्र अनुभव के लिए मूल्यांकन और समर्थन, एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान शामिल है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उत्कृष्ट सहकर्मी–समीक्षा कार्य और प्रभावी ढंग से बीज अध्ययन का समर्थन करेगी ।

'मूल्य' एक व्यापक शब्द है। जीवन मूल्यों का अभिप्राय हित, आनंद, वरीयताएं, कर्त्तव्य नैतिक दायित्व, आकांक्षाएं, अपेक्षाएं और आवश्यकताएं, नापसंद और बदलाव से है। मूल्य कर्म की दृष्टि से चयन के मापदण्ड होते हैं। वे यह बताते हैं कि कुछ विशेष परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

प्रत्येक समाज के अपने सांस्कृतिक मूल्य, परम्पराएँ और मापदण्ड होते हैं। सामाजिक प्राणी के रूप में हम अपने परिवेश का अर्थ समझते है। इससे बालक समाज के नियमों को सीखते हैं।

शिक्षा न केवल बालक को ज्ञान–प्रदान करती है तथापि उसके व्यवहारों, विचारों तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी कारकों का भी पूर्णरूप से विकास करने में सहायक होती है।

1.2 शोध की आवश्यकता :– मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत आस्था, विश्वास, लक्ष्य, सामाजिक परम्पराओं तथा पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं। ये मूल्य सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में पहुँचते हैं। अतः आज हमारी शिक्षा प्रणाली अपना काम संभवतः ठीक प्रकार से नहीं कर रही है, क्योंकि प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति इन मूल्यों से युक्त नहीं है।

भारतीय जनमानस की स्थिति उस कस्तूरीमृग के समान है जिसकी नाभि में सुगन्धित 'कस्तूरी' के होते हुए भी वह उसी सुगन्ध को प्राप्त करने के लिये व्याकुल रहता है, एवं सुगन्ध को पाने के लिए घास सूँघता फिरता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों की चर्चा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्राचीन शिक्षा का सबसे बड़ा मूल्य ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् 'मुक्ति' था। जिसमें मुक्ति का अर्थ सभी प्रकार के दुरूखों से छुटकारा अर्थात मोक्ष की प्राप्ति था।

अनेक भारतीय शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी बताकर उसे मूल्यों से पर्याप्त रूप से जोडने की बात कही तथा इस विषय में अपने अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया।

विभिन्न आयोगों की सिफारिशों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए लगता है कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए परन्तु समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि प्रतिदिन व्यापक रूप में दृष्टिगत होती है। इसी विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुई कि प्रस्तावित शोधकार्य द्वारा अध्यापकों में विद्यमान मूल्यों के बारे में पता लगाया जाये, जिससे कि उनकी वर्तमान स्थिति को समझकर प्रभावी मूल्यों के निर्माण का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध समस्या का चयन किया गया।

1.3 समस्या कथन :– प्रारम्भिक विद्यालयों में अध्यापक मूल्यों का अध्ययन

1.4 शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों में मूल्यों संबंधी विभिन्न आयामों (शैक्षिक, नैतिक,सामाजिक एवं राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सौन्दर्यात्मक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण) का लिंग भेद, विद्यालय क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) एवं प्रारम्भिक(प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) विद्यालयों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

1.5 शोध परिकल्पनाएँ

1. प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों के प्राप्तांक औसत स्तर के हैं।

2. प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों पर अध्यापक लिंग भेद के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों पर विद्यालय क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
4. प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों पर प्रारम्भिक विद्यालयों (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

1.6 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रत्येक शोध में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्त्वपूर्ण एवं तर्कयुक्त कार्य है। इससे समस्या की गहनता के साथ–साथ समस्या की स्पष्टता तथा शिक्षा जगत में उसके महत्त्व की जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी शोध अध्ययन द्वारा प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के शिक्षण मूल्य को लेकर पृथक रूप से किसी प्रकार का शोध नहीं किया गया है। प्राथमिक शिक्षा एक अनिवार्य शिक्षा होने के कारण तथा बालकों के अधिगम स्वरूप एवं स्तर को देखते हुए पृथक से शिक्षक मूल्य का सम्प्रत्यय सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप से प्रतिपादित करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा प्राथमिक स्तर पर संचालित विभिन्न प्राथमिक शिक्षा के विद्यालय अध्यापकों के शिक्षक मूल्य का शोध सम्प्रत्यय विकसित कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

1.7शोध में प्रयुक्त शब्दावली

प्रारम्भिक शिक्षा

नई शिक्षा नीति के अनुच्छेद संख्या– 1.2 के अनुसार पहले आठ वर्षों की स्कूली शिक्षा को प्रारम्भिक शिक्षा कहते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया हैं।

विद्यालय

सामान्यतः सरकारी एवं निजी क्षेत्र के ऐसे विद्यालय जिसमें बालक को प्रायरू 5–6 घण्टे अध्ययन कराया जाता है, इसमें आवासीय नीति लागू नहीं होती है, इन विद्यालयों में भी बालक का शैक्षिक, सांस्कृकि नैतिक विकास पर ध्यान दिया जाता है किन्तु इन विद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षित स्तर की गुणवत्ता पर ही विशेष बल दिया जाता है। इन विद्यालयों में सभी वर्गों के प्रतिभावान व सामान्य मानसिक स्तर के बालक–बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

विद्यालयों के संदर्भ में कुछ विद्वानों ने अपने मत इस प्रकार दिये हैं–

''स्कूल, वे शिक्षण संस्थाएँ है जिनको सभ्य मानव ने इस दृष्टि से स्थापित किया है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिल सकें।''– जे.एम.रॉस

''स्कूल एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास की दृष्टि से उसे विशिष्ट क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा दी जाती है।''– जॉन डी.वी.

मूल्य –

'मूल्य' एक अमूर्तपूर्ण गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्त्व की ओर इंगित करता है। प्रत्येक समाज के कुछ आदर्श है जिन पर सामाजिक प्रगति तथा परिवर्तन की दिशा निर्भर करती है। मूल्य निर्धारण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का भी महत्त्वपूर्ण योग होता है। इस प्रकार–''सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों के मूल्यांकन की प्रक्रिया को मूल्य (**Value**) कहते हैं।' जाति, समाज, राष्ट्र के मूल्यों में विभिन्नताएं होते हुए भी, मानवीय मूल्य समान होते हैं। उदाहरणार्थ– अहिंसा, सत्य, अशौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, प्रेम, सहानुभूति, परोपकार दया आदि मानवतावादी मूल्य देश, काल, समाज की सीमा लांघ, समस्त दिशा के समान है।

1.8 शोध कार्य में प्रयुक्त विधि –

अनुसंधान क्रियाविधि यह अध्ययन पाठ्य आलोचनात्मक, मूल्यांकनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का उपयोग करते हुए प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों के माध्यम से उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ के साथ एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 के संपूर्ण अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है। इसमें एमएलए हैंडबुक ऑफ रिसर्च के 8वें संस्करण का सख्ती से पालन किया गया है। शोध प्रकृति, सर्वेक्षण की मौलिकता एवं उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी द्वारा वर्तमान शोध में अनुसन्धान की 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया जायेगा।

1.9 न्यादर्श–

डेटा संग्रह शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से आँकड़ों का संकलन किया गया है जिसके आधार पर सम्पूर्ण प्रपत्र का विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत प्राथमिक संसाधन नई शिक्षा नीति 2020 के मूल पाठ से एकत्र किए गए हैं जो भारत सरकार द्वारा

जारी किया गया है। माध्यमिक स्त्रोत एक माध्यमिक संसाधन एक स्त्रोत है जो नई शिक्षा नीति 2020 पर संदर्भ पुस्तकों सहित पुरानी या गैर–मूल जानकारी प्रदान करता है। माध्यमिक स्त्रोतों में जीवनी, लेखक के कार्यों के महत्वपूर्ण अध्ययन, शोध पत्र और शोध प्रबंध, शोध पुस्तकें, व्यक्तिगत साक्षात्कार, विकिपीडिया, ब्रिटानिका और अन्य वेबसाइटें शामिल हैं। वर्तमान शोध कार्य में नागौर जिले के प्रारम्भिक विद्यालयों ·ð¤ 800 अध्यापकों को न्यादर्श के लिए चुना जाएगा । जिसमें शिक्षकों के, शिक्षक मूल्यों का अध्ययन किया गया। शोधार्थी द्वारा 800 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया जिसमें से 400 पुरुष अध्यापक एवं 400 महिला अध्यापिकाऐं ली गई। तथा 400 ग्रामीण अध्यापकों एवं 400 शहरी अध्यापकों को लिया गया। Âýæ Íç× ·¤ विद्यालयों के अध्यापक (400) तथा उच्च Âýæ Íç× ·¤ विद्यालयों के अध्यापक (400) लिये गयें।

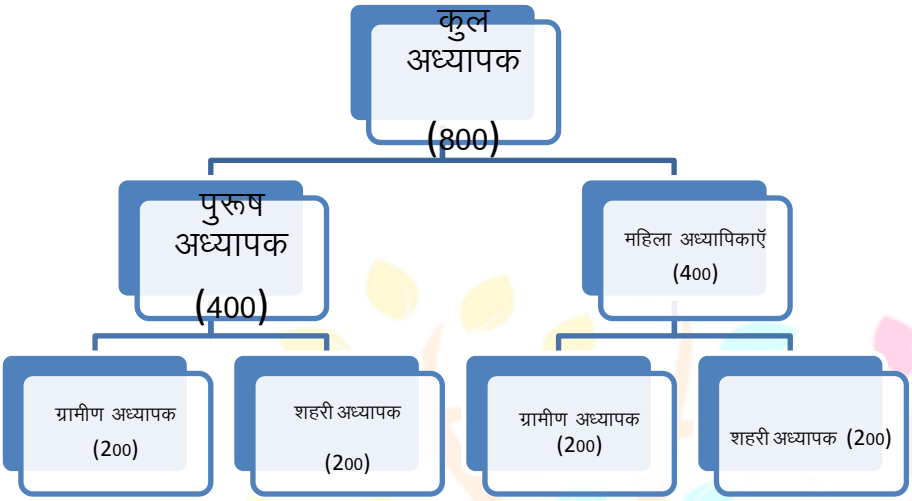

1.10 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में अध्यापक मूल्य के मापन हेतु शिक्षक मूल्य अन्वेषिका (डॉ. समीम करीम) मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया जायेगा।

1.11 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

किसी भी सामाजिक घटा का यथा तथ्य अध्ययन करने के लिये विधियों का प्रयोग किया जाता है। उसके संबंध में आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं और उसका वर्गीकरण तथा सारणीयन करके, उन्हें सरल, व्यवस्थित एवं शोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है ताकि उससे निष्कर्ष निकाले जा सकें। दत्त सामग्री के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया जायेगा –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. 'टी' परीक्षण (t test)

1.12 शोध परिसीमांकन

शोध प्रबन्ध को निम्न प्रकार से सीमांकित किया जाएगाः–

1. यह समस्या नागौर जिले के प्रारम्भिक विद्यालयों तक सीमित रहेगी।
2. इस शोध प्रबन्ध में प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापक लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा ।
3. इस शोध प्रबन्ध में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया जाएगा तथा प्रारम्भिक विद्यालयों (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक) के प्रभाव का भी अध्ययन किया गया जाएगा ।
4. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अध्यापकों के मूल्य मापन के लिये शमीम करीम का अध्यापक मूल्य मापनी का प्रयोग किया जाएगा ।

1.13 वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष

किसी भी कार्य का सार्थक परिणाम उसका निष्कर्ष होता है। इसके अभाव में कार्य का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्रारम्भिक विद्यालय के अध्यापकों के संदर्भ में अध्यापकों में मूल्यों का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्तों के विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुएः–

❖ **प्रारम्भिक विद्यालयों में शिक्षकों के मूल्यों व उसके आयामों का अध्ययन**

- प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में मूल्य संबंधी विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य के प्राप्तांक औसत से अधिक है। सुखवादी मूल्य आयाम के औसत प्राप्तांक से कम है।

❖ **प्रारम्भिक विद्यालयों के अध्यापकों में मूल्यों संबंधी आयामों पर लिंग भेद का प्रभाव**

- प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक,धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

❖ **प्रारम्भिक विद्यालयों के कुल अध्यापकों में मूल्यों संबंधी आयामों पर क्षेत्रीय भिन्नता (ग्रामीण एवं शहरी) का प्रभाव–**

- प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक , सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का सार्थक अंतर पाया गया है।

❖ **प्रारम्भिक विद्यालयों (प्राथमिक विद्यालयों व उच्च प्राथमिक विद्यालयों) के अध्यापकों में मूल्यों संबंधी आयामों का प्रभाव**

- प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक,आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर प्रारम्भिक विद्यालयों के प्राथमिक विद्यालयों व उच्च प्राथमिक विद्यालयों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

1.14 शैक्षिक निहितार्थ

मूल्यों की शिक्षा वर्तमान समय की मांग है साथ ही देश के भविष्य को पाश्चात्य प्रभाव से सुरक्षित रखने का माध्यम है। विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि अध्यापकों से छात्र/छात्राओं में किसी ना किसी मूल्य के निर्माण में योगदान देती है, मूल्यों की शिक्षा के छात्रों के वांछित व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है और शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त किया जा सकता है। केवल विद्यालयी गतिविधियां ही ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में मूल्यों के अंतर को दूर कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. अग्रवाल, वी.पी. (2002) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के चार वर्षीय एकीकृत बीएससी, बी.एड. विधार्थियों की व्यवसायिक शिक्षण अभिवृति, शिक्षण व्यवसायिक अभियोग्यता, व्यक्तित्व गुण, व्यवसायिक दक्षता एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन, जनरल ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च, वोल्युम 9 (1) 13–18।
2. अरोड़ा,आर.के.एस. (2006) वर्तमान प्रचलित अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का परिक्षण उभरते शैक्षिक संदर्भ एवं अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का, अध्यापकों की परिवर्तित संदर्भ, व्यावसायिक आवश्यकता के संदर्भ में– एक अध्ययन. शोध परियोजना क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर।
3. बजवा,एम. (2003) एक दक्षता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की रणनीतिक योजना. अध्यापक शिक्षा 16 (4) अप्रैल पेज 481–502।
4. भट्टाचार्य,जे.एस. (2002) चार वर्षीय एकीकृत बीएससी, बी.एड., कार्यक्रम एवं एक वर्ष बी.एड. कार्यक्रम के मध्य शिक्षण व्यवसाय में शिक्षण की सफलता के कारकों के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रयोजना क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर।